साहित्य सिनेमा सेतु
रील से रियल लाइफ तक
ISSN: 2584-0819

कविता : पुराने खत

-संतोष कुमार प्रजापति 'माधव'
शिक्षक (परास्नातक,बी.एड.), आकाशवाणी केन्द्र छतरपुर(म.प्र.) से गीतों का प्रसारण, गद्य और पद्य की लगभग सभी विधाओं में लेखन।
https://sahityacinemasetu.com/kavita-purane-khat/

वर्षों पहले पत्र लिखे थे,
लगता जैसे ही कल है।
प्यार छिपा था उनमें पावन,
जैसे गंगा का जल है।।

शब्द-शब्द में सूरत तेरी,
भाव सुवासित अनुपम है।
जिसकी उपमा करेगा कैसे,
पारिजात भी गुमसुम है।।

अन्तस के उद्गार समेटे,
चुन-चुन मोती गूँथे थे।
सावित्री सी प्रीत अनोखी,
लेश नहीं हम झूठे थे।।

वजह यही जब तक न देखूँ,
अन्न मुझे कब भाया था।
सम्मोहक जादुई बातों ने,
रातों मुझे जगाया था।।

जब भी कभी पुराने खत वे,
हाथों में ले पढ़ता था।
खो जाता स्मृति आलिंगन,
फिर-फिर गिरिवर चढ़ता था।।

लेकिन मेरा प्रणय निवेदन,
तुमने ही स्वीकारा था।
मैंने जीती दुनिया सारी,
हर कोई मुझसे हारा था।।

आज वही खत मिला हमें,
जब भी दोनों बाँचा करते हैं।
अधरों से संगीत निकलता,
नैनों में नाचा करते हैं।।